ब्रह्माकुमारी संस्था, ब्रह्माकुमारी मिशन को कुछ लोग अच्छा बताते हैं। जबकि कुछ लोग इस संस्था पर सवाल भी उठाते हैं। कुछ लोगों का कहना यह है कि सदियों से जो हिंदू वैदिक मार्ग पर चल रहा है, इस संस्था का उद्देश्य उसे भटकाना है। जबकि कुछ लोगों का मानना यह है कि इस कलियुग से सतयुग की और ही ब्रह्माकुमारी संस्था, ब्रह्माकुमारी मिशन लोगों को लेकर जाएगा। अब साधु-संत इस संस्था के बारे में, इस मिशन के बारे में क्या सोचते हैं, आज हम जानेंगे दिव्य शक्ति अखाड़े के आचार्य महामंडलेश्वर संत कमल किशोर जी से...

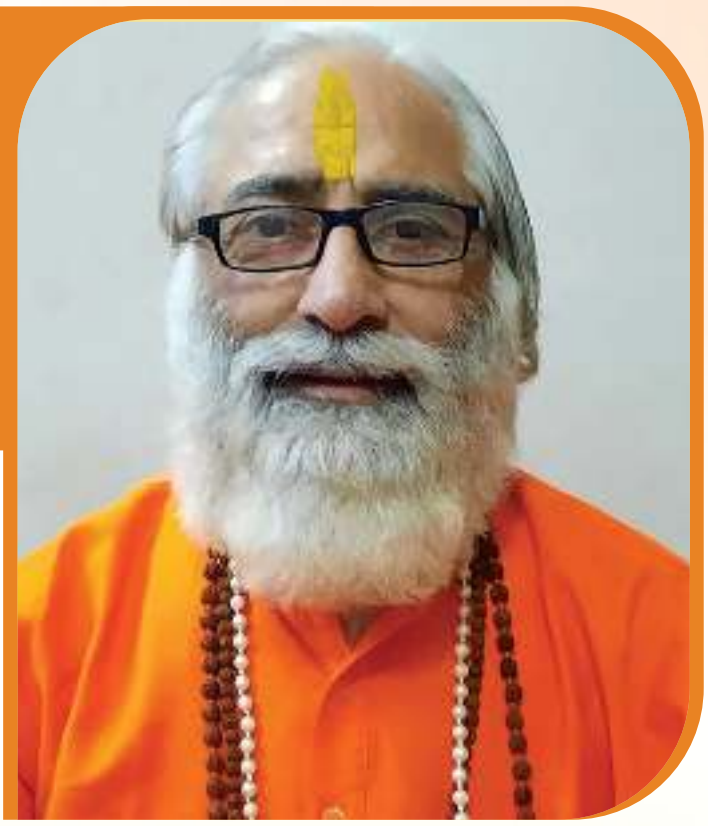

संत ने खोल कर रखे ब्रह्माकुमारीज़ के सारे राज़

रिपोर्टरः- सबसे पहले तो मैं जानना चाहूंगा कि ब्रह्माकुमारी मिशन आखिर है क्या? और क्या आप भी कभी ब्रह्माकुमारी मिशन में, इनकी संस्थाओं में गए हैं? आपने क्या महसूस किया है?

संतः ब्रह्माकुमारीज़। पहले तो यह जान लें कि ये शब्द ब्रह्मकुमारी नहीं है ब्रह्माकुमारी है। दूसरी चीज़ आपने पूछा कि हम संत होने के नाते क्या कभी वहां पर गए हैं? हम संत होने के नाते बहुत सारे संतों से आमतौर पर मिला करते हैं। वैसे अगर संत लोग एक-दूसरे से ना भी मिलें, तो भी भीतर से एक-दूसरे से हम लोग मिले हुए होते हैं। क्योंकि संतों की सोच एक जैसी होती है। मानवता के भले की सोच होती है। जैसे आपने कहा कलियुग से सतयुग की ओर ले जाने वाली सोच होती है। पाप से पुण्य की ओर ले जाने वाली सोच होती है। क्रोध से प्रेम की ओर ले जाने वाली सोच होती है। यह सोच हर संत की होती है। इसलिए एक-दूसरे के साथ संत आपस में मिले हुए होते हैं। हम ब्रह्माकुमारी आश्रम में गए हैं। जाते रहे हैं। और यहां तक कि इनके हेड क्वार्टर माउण्ट आबू में चार बार जा चुके हैं। और हर बार एक नया अनुभव लेकर आए हैं। इनकी मुख्य प्रशासिका दादी प्रकाशमणि जी से मिले हैं, दादी रतन मोहिनी जी से हम मिले हैं। और बाकी दीदी-दादी से अभी भी हमारी मुलाकात अक्सर होती रहती है। तो बहुत अच्छा लगता है। **आपने ब्रह्माकुमारी मिशन क्या है? साथ में आपने ये भी कहा है कि क्या वैदिक धर्म के यह विपरीत चलते हैं?**

नहीं। ऐसी बात नहीं है। यह वैदिक धर्म के कहीं भी विपरीत नहीं चलते हैं। समझ-समझ का फर्क है। जैसे एक गिलास हो, गिलास में पानी आधा भरा हुआ हो। एक आदमी कहता है नहीं यह आधा भरा हुआ है। दूसरा कहता है नहीं आधा खाली है। संतों की सोच थोड़ी अलग होती है। संत कहते हैं कि गिलास पूरा का पूरा भरा हुआ है। क्योंकि उनकी सोच सकारात्मक होती है। पूरा का पूरा भरा हुआ गिलास है। "आधा पानी से, आधा हवा से" यह सोच होती है। जिन लोगों ने जिस दृष्टि से देखा, अपनी दृष्टि से देखा और उसका अपना अर्थ निकाल दिया। तो वह यह कह सकते हैं कि

ब्रह्माकुमारी मिशन क्या करता है?

आज पूरी दुनिया को डिप्रेशन से, मानसिक अवसाद से निकालने का कार्य कौन करते हैं? यह ब्रह्माकुमारी आश्रम वाले करते हैं। ब्रह्माकुमार और ब्रह्माकुमारियां करते हैं। मानव के मनोबल को ऊंचा उठाने के लिए, उसमें नैतिक साहस भरने के लिए, नैतिकता डालने के लिए, उसका आचरण शुद्ध करने के लिए यह भी अपनी तरह से सेवा कर रहे हैं। यह काम बहुत ऊंचा है और बड़ा भी।

हां ये वैदिक धर्म के विरूद्ध चलते हैं। लेकिन ऐसा है नहीं। अब मैं आपको एक छोटा-सा उदाहरण देता हूँ, कि ब्रह्माकुमारी आश्रम में यह कहा जाता है कि लोगों की जो धारणा बन गई कि जितने भी वहां पर लोग काम करते हैं, जाते तो पति-पत्नी के तौर पर मान लीजिए कि पति-पत्नी वहां पर गये इनके आश्रम में और वहां भाई-बहन बनके रह जाते हैं। यह भी एक मिसकन्सेप्शन(गलतफहमी) है। जब हम एक प्रजापिता ब्रह्मा जिसने हमें सृजित किया है, बनाया है। भगवान शिव ने बनाया है हमें, वो हमारे परमपिता हैं। उन्होंने हमें बनाया है तो हम आपस में क्या हुए? आत्मिक रूप से क्या हुए? भाई-बहन हुए या नहीं हुए, या भाई-भाई हुए या नहीं हुए। वही तो वे कहते हैं। समझ का फेर है बाकी और कुछ भी नहीं है। - क्रमशः

मॉस्को-रशिया। 10वें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर भूमि-आरक्षित 'स्टेट मुज़े-ज्ञापोवेदनिक कोलोमेन्सकोये' में आयोजित कार्यक्रम का शुभारंभ राजदूत विनय कुमार ने किया। कार्यक्रम में राजयोगिनी ब्र.कु. सुधा दीदी ने सभी को राजयोग ध्यान के बारे में बताते हुए इसकी गहन अनुभूति कराई। इस अवसर पर मॉस्को सरकार की विदेश आर्थिक और अंतर्राष्ट्रीय सम्बंधों की उप प्रमुख ओल्गा ज़िलिना व जवाहरलाल नेहरू सांस्कृतिक केंद्र के अनुभवी योग शिक्षक बृजेश गुप्ता सहित बड़ी संख्या में ब्र.कु. भाई-बहनें व शहर के लोग शामिल रहे। कार्यक्रम के पश्चात् टीवी-ब्रिक्स द्वारा ब्र.कु. सुधा दीदी का इंटरव्यू भी लिया गया।

ओ.आर.सी.-गुरुग्राम। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष्य में भारत सरकार के वित्त मंत्रालय, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, खेल एवं युवा मंत्रालय, कोयला मंत्रालय, शिक्षा मंत्रालय, जनजातीय कार्य मंत्रालय, सिपेट,रसायन और उर्वरक मंत्रालय आदि विभिन्न मंत्रालयों में कार्यक्रम का आयोजन हुआ। जिसमें उस मंत्रालय के सचिव, अतिरिक्त सचिव, संयुक्त सचिव व सभी उच्च अधिकारी व कर्मचारी शामिल रहे। इसके साथ ही ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा अनेक कंपनियों एवं संस्थानों में भी कार्यक्रम आयोजित किये गये जिसमें वहां के उच्च पदाधिकारी व कर्मचारी मौजूद रहे।

दिल्ली-किंग्सवे कैम्प। ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र पर बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए आयोजित समर कैम्प के दौरान हिंदू राव अस्पताल की बाल रोग विशेषज्ञ डॉ. सुमन अरोड़ा, प्रोस्थोडॉन्टिस्ट और न्यूट्रिशनिस्ट डॉ. जितेंद्र खन्ना, भाषा प्रशिक्षक डॉ. प्रीति भूटानी, सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. साधना बहन तथा अन्य राजयोग प्रशिक्षकों ने बच्चों का मार्गदर्शन करते हुए उन्हें बुराइयों से दूर रहने और मूल्यों के प्रति जागरुक किया। समापन अवसर पर सभी प्रतिभागी बच्चों को प्रमाण पत्र देकर उनका उमंग-उत्साह बढ़ाया गया। कार्यक्रम में बच्चों व उनके अभिभावकों सहित 200 से अधिक लोग शामिल रहे।

पटना-बुद्धा कॉलोनी(बिहार)। ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र पर डॉक्टर्स डे के उपलक्ष्य में आयोजित सम्मान समारोह के दौरान समूह चित्र में डॉ. सुमन,चाइल्ड स्पेशलिस्ट,पीएमसीएच, डॉ. रीमा, फीज़ियोथैरेपिस्ट,एम्स,पटना, डॉ. सीमा सहाय,गायनेकोलॉजिस्ट,पीएम सीएच, डॉ. अंजू,गायनेकोलॉजिस्ट, डॉ. योगेश कृष्णा सहाय, चाइल्ड स्पेशलिस्ट,बीएमआईएमएस,पावापुरी, डॉ. अंकिता,मेडिकल ऑफिसर,बिहार बिजली बोर्ड, डॉ. रमेश,मेडिकल ऑफिसर,वैशाली,बिहार, ब्र.कु. मृदुल बहन,सेवाकेंद्र संचालिका तथा अन्य।